ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

नरेन्द्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यास : परम्परा और प्रयोग

डॉ. एम. नारायण रेड्डी

सार संक्षेप में : भारतीय वाङ्मय में वाल्मीकि-रामायण से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक काव्य, नाटक, उपन्यास आदि लिखे गये हैं और अब भी लिखे जा रहे हैं। पुराणों में भी रामकथा को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। अनेक विदेशी भाषाओं में रामकथा का अनुवाद, रूपांतर, विकास और विस्तार हुआ है। अब तक के काव्य रूपी रामकथा को समकालीन उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली जी ने गद्य का रूप दिया है। अर्थात् उन्होंने उपन्यास के शिल्प-विधान के अनुसार 'रामचरितमानस' की रामकथा को औपन्यासिक रूप देकर एक नया प्रयोग हिन्दी साहित्य में किया है। इस प्रकार का प्रयोग किसीने अब तक नहीं किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में नरेन्द्र कोहली जी के रामकथात्मक उपन्यासों का विवेचनात्मक अध्ययन परम्परा के सापेक्ष्य में किया गया है। इस नये प्रयोग को युगबोध के सन्दर्भ में भी परिशीलन करने का प्रयत्न किया है। इसमें वस्तु की वियशेषता बताते हुए उपन्यासों एवं मानस में बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड के प्रमुख प्रसंगों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। फिर आलोच्य उपन्यासों में जो नये प्रसंगों का प्रस्ताव किया गया है उनका भी समालोचन करने का प्रयास किया गया है और उन में जो युगबोध परिलक्षित होता है उसका अंकन भी करने का प्रयत्न किया है।

उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली जी ने पौराणिक रामकथा को लेकर नये सिरे से अपनी निजी विचारधारा एवं युगीन परिवेश के आधार पर रामकथात्मक उपन्यासों की रचना की है। उन्होंने अपनी रामकथा को शुद्ध मानवीय, व्यावहारिक, तर्क सम्मत एवं जैविक रूप में प्रतिष्ठित किया है। यह नया प्रयोग कई रूपों में दिखाई देता है। अभिव्यक्ति, संकोच और भाव सघनता की रक्षा के लिए कोहली जी ने कथा प्रसंगों को आवश्यकतानुसार विस्तार प्रदान करते हुए प्रत्युत चयन-कौशल व्यक्त किया है। कोहली जी ने पौराणिक रामकथा को आधुनिक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करने के लिए जो अतिमानवीयता का मिथक भंजन किया है वह कृति के आस्वाद का महत्वपूर्ण आयाम है। पुराण कथा को रूपांतरित करने का प्रभाव यह पड़ा है कि विविध मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के प्रयोग के कारण उनमें विश्वसनीयता के साथ व्यापकता भी आयी है। अपनी विचारधारा का निर्वाह करने के कारण कोहली जी ने पौराणिक रामकथा के मिथकों की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है। परम्परा के अंतर्गत स्रोत-ग्रन्थ के सात-काण्डों के प्रमुख प्रसंगों का आयोजन किया गया है। फिर प्रयोग के अंतर्गत स्पष्ट किया जा सकता है कि कोहली जी ने अपनी रामकथा में अहल्या

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

प्रसंग, वाली-मायावी युद्ध, राम-रावण युद्ध आदि प्रसंगों में विश्वसनीयता एवं रोचकता जगाने का प्रयास किया है। साथ ही स्वाभाविक ढंग से रामकथा की घटनाओं और पात्रों को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। कोहली जी की औपन्यासिक रामकथा में कई प्रसंगों में वस्तु-विधान का निर्वाह हुआ है। इस प्रकार कथा के विभिन्न प्रसंगों में से गुजरते हुए लेखक ने विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं, जनसामान्य का शोषण, बुद्धिजीवियों के कर्त्तव्य, समाज में नारी का स्थान, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, जाति और वर्ण की विभीषिकाओं, लोलुप और स्वार्थ बुद्धिजीवियों, शासनाधिकारियों इत्यादि विषयों का अत्यन्त क्रान्तिकारी विवेचन किया है और अपनी मान्यताओं के सहारे एक प्रसिद्ध कथा को पूर्ण मौलिक तथा आधुनिक उपन्यासों के रूप में निर्मित किया है।

संकेत शब्द : पुत्रेष्टि यज्ञ, विश्वामित्र की याचना, अहल्योद्धार, सीता विवाह-शिव धनुर्भंग, परशुराम का प्रसंग, दशरथ का शासन, राम के युवराज्यभिषेक और निर्वासन, राम के निर्वासन की प्रतिक्रियाएँ, चित्रकूट प्रकरण, शूर्पनखा प्रसंग, खर-दूषण का वध, अगस्त्य प्रसंग, रामकथा का मुखर, सीता-हरण प्रसंग, सुग्रीव से भेंट एवं वालि वध, हनुमान द्वारा समुद्र संतरण, लंका दहन, सेतुबन्ध, युद्ध के पहले रावण का कपट, कुम्भकर्ण का वध , रावण वध और मंडोदरी का विलाप, सीता की अग्नि-परीक्षा और अयोध्या लौटना।

प्रस्तावना : कोहली जी सजग एवं चेतना संपन्न, सृजनशील लेखक हैं। उन्होंने भारत में प्रचलित रामकथा का पुनर्लेखन किया है। 'रामचरितमानस' के गहरे अध्ययन के कारण, लेखक की तर्कशील चेतना जागृत होने के कारण कोहली जी ने रामकथा को आधुनिक संदर्भ में पुन: लिखा है। कोहली जी ने पौराणिक कथा को नये सिरे से अपनी विचारधारा के अनुसार रामकथात्मक उपन्यासों की रचना की है। रामकथा को आधार बनाकर नरेन्द्र कोहली जी ने पाँच उपन्यास लिखे हैं। यथा 1. दीक्षा 2. अवसर 3. संघर्ष की ओर 4. युद्ध-1 और 5. युद्ध-2

विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से कोहली जी की रामकथा प्रारंभ होती है और रावण वध के बाद समापित। कोहली जी के अनुसार इस रामकथा का मूल स्रोत तुलसीदास विरचित 'रामचरितमानस' है। 'मानस' बार-बार पढ़ने के कारण मानस की कथा को लेकर, संदर्भों को लेकर अनेक प्रश्न उनके मन में उठ खडे थे। उन प्रश्नों का समाधान कोहली जी ने अपनी ओर से रामकथा के पुनर्लेखन के द्वारा दिये हैं। नये संदर्भों को भी उन्होंने अपनी रामकथा में जोडा है। कोहली जी बंगला देश के युद्ध के संदर्भ में, अमेरिका के शासकों को रावण के रूप में एवं पाकिस्तानी शासकों को राक्षसों के रूप में देखा है। बिहार

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

में अछूतों पर हुए अत्याचारों के संदर्भ में अछूतों की पीडा में ऋषि-मुनियों तथा वनवासी समाज की दयनीय स्थिति को कोहली जी ने देखा है और उसी को रामकथा में जोडा है।

स्पष्ट है कि मिथक आदिम मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। कथ्य और प्रयोजन की दृष्टि से ये मिथक पुनर्रचनाशील होते हैं। आदिम ग्रन्थों में मिलनेवाले चमत्कारतत्व भी आदिम विश्वास और मिथकीय कल्पना से जुडे हुए हैं। कोहली जी ने आधुनिक मानवीय संपूर्णता की उपलब्धि के लिए मिथकीय उपन्यासों की रचना की है। आधुनिक काल में इस प्रकार के मिथकों को आधार बनाकर मिथकीय उपन्यास पहले नरेन्द्र कोहली जी ने ही लिखा है। उनका यह प्रयास सोद्देश्यपूर्ण है। कोहली जी ने मिथक को मानवीय चेतना के प्रतिनिधित्व करनेवाला अभिव्यक्ति रूप समझकर बदलते नवीन परिवेश में नये दृष्टिकोण को लेकर रामकथा में कुछ नयी उद्भावनाओं को जन्म दिया है। उनकी यह आधुनिक कल्पना उचित जान पड़ती है। अपनी यथार्थ एवं तार्किक दृष्टि के कारण 'रानचरितमानस' में स्थित लीला, अलौकिकता को कोहली जी ने नहीं माना है। स्पष्ट है कि कोहली जी ने अपने विचारों के अनुसार मिथकीय प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया है। इसके द्वारा उन मिथकीय प्रसंगों एवं पात्रों के प्रति जो आम धारणाएँ तथा विश्वास होते हैं, उनको लेकर पुनर्विचार व पुनरान्वेषण करने की प्रेरणा जगाई है। अपने विचार एवं जीवन दर्शन के अनुकूल कोहली जी ने रामकथा में जहाँ-जहाँ नये प्रसंग और संदर्भों को जोडा है उनका विश्लेषण निम्नांकित है।

पुत्रेष्टि यज्ञ एवं राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का जन्म : कोहली जी की रामकथा में पुत्रेष्टि यज्ञ का उल्लेख नहीं है। रामायण में प्राप्त इस कल्पित प्रसंग के बारे में उन्होंने लिखा है– "सम्राट के दरबारी कवियों और इतिहासकारों ने दशरथ के पुत्रहीन होने, पुत्र की कामना से अनेक विवाह करने तथा अंत में पुत्रेष्टि यज्ञ के माध्यम से चार पुत्रों की प्राप्ति की कथा बनाकर ग्राम-ग्राम में प्रचारित कर दी। पर क्या ऐसी कपोल-कल्पनाओं से तथ्य मिटाये जा सकेंगे?"[1] राम, लक्ष्मण आदि के जन्म के बारे में उन्होंने लिखा है– "इस स्थल पर आकर राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के वय के विषय में जाने कब से जमी पडी जिज्ञासाएँ जाग उठ खड़ी हुईं। राम को एक नन्हे बालक के रूप में मेरे मन ने कभी स्वीकार नहीं किया। आर्यों का मर्यादा-पुरुषोत्तम, उनके आश्रम की मर्यादा भंग कर देगा? पचीस वर्षों के वय के पश्चात् गृहस्थ-आश्रम में प्रेवेश का विधान है और बारह अथवा सोलह वर्षों के राम ने सीता से विवाह कर लिया? दूसरा प्रश्न और भी बीहड था– रामायण में राम के प्रति उनके छोटे भाइयों का सम्मान बराबर के बडे भाई का-सा न होकर पिता-तुल्य बड़े भाई का-सा है। अनेक स्थानों पर छोटे भाइयों के प्रति स्नेह से अभिभूत होकर राम उन्हें अपनी गोद में बैठा लेते हैं। ये सारी बातें मुझे

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

बाध्य कर रही थी कि मैं इन चारों को समवयस्क न मानूँ। उनका समवयस्क होने का मूल आधार-पुत्रेष्टि-यज्ञ, मुझे किसी भी प्रकार स्वीकार्य नहीं था।"[2]

परन्तु 'मानस' में पुत्रेष्ठि-यज्ञ का विस्तार वर्णन है। पुत्रहीन दशरथ ने वशिष्ठ की सलाह से ऋषि श्रृंगी के नेतृत्व में पुत्र के लिए शुभ यज्ञ कराया। भक्ति सहित आहुति देने पर हाथ में हविष्यान्न(खीर) लिए अग्निदेव प्रकट हुए। तब वशिष्ठ ने कहा कि इस खीर को भाग बनाकर बाँट दो। तुम्हारा वह शुभ काम सिद्ध हो जायेगा।

"सृंगी रिषिहि वसिष्ठ बोलावा, पुत्र काम सुभ जग्य करावा।।

भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे, प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे।।"[3]

राम, लक्ष्मण की आयु : कोहली जी पुत्रेष्टि यज्ञ को न मानने के कारण रामकथा में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की आयु में अतंर है। राम की आयु जब पच्चीस है तब लक्ष्मण की आयु केवल तेरह साल ही है।[4] लेकिन 'मानस' के अनुसार राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का जन्म पुत्रेष्टि-यज्ञ के बाद एक ही साथ हुआ है।

विश्वामित्र की याचना : कोहली जी की रामकथा सिद्धाश्रम से ही प्रारम्भ होती है। इसकी प्रथम महत्त्वपूर्ण घटना विश्वामित्र के द्वारा दशरथ से राम की मांग है। यज्ञ रक्षा करने के लिए और राक्षसों के क्रूर अत्याचारों को रोकने के लिए विश्वामित्र राजा दशरथ के पास जाकर राम की याचना करता है। रावण के द्वारा भेजे गये राक्षसों से लड़ने की बात दशरथ को मालूम होते ही राम के प्रति वात्सल्य जागृत होता है और वह स्वयं सेना सहित यज्ञ रक्षा करने की बात कहता है– "राम राक्षसों से लड़ने जायेंगे। जिन राक्षसों के अत्याचारों को देखते हुए भी वे एक क्षीण-से भय के कारण, उनकी सदा उपेक्षा करते रहे, उनसे लडने के लिए वे अपने राम को कैसे भेज सकते हैं। पर अब अपने राम को राक्षसों के मुख में धकेल कर मैं स्वयं को नहीं बचाना चाहता।"[5] फिर वह कहता है– "मैं स्वयं अपनी चतुरंगिणि सेना लेकर आप के आश्रम की रक्षा करूँगा, ऋषिवर। मैं सेना को तुरन्त तैयार होने का आदेश भिजवा देता हूँ। आप कब चलना चाहेंगे?"[6]

इन बातों को सुनकर विश्वामित्र की क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित होती है। वह क्रोध में आकर दशरथ के शासन के प्रति भी भला-बुरा कहता है। वशिष्ठ की सांत्वना भरी बातों से विश्वामित्र का क्रोध कम होता है। इस रामकथा के राम साधारण मानव ही है। अवतार वाली बात को कोहली जी ने विरोध किया है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

यज्ञ रक्षा में राम-लक्ष्मण : कोहली जी की रामकथा में विश्वामित्र के द्वारा होनेवाले यज्ञ की रक्षा के लिए केवल राम-लक्ष्मण ही नहीं ग्रामीण योद्धा भी काम करते हैं और आश्रमवासी भी शस्त्र धारण करके लड़ते हैं– "मध्य में यज्ञवेदी पर गुरु विश्वामित्र आसीन थे। उनके दक्षिण और वाम भाग में, कुछ हटकर आचार्य विश्वबन्धु तथा मुनि अजानुबाहु बैठे थे। उनके पीछे समस्त आश्रमवासी थे। आश्रमवासी इस समय भी सैनिक मुद्रा में थे। जिनके पास जो भी शस्त्र था, वह उसके सम्मुख रखा हुआ था। धनुष-बाण, खड्ग, परशु, गंडासा, चाकू-छुरी, लाठी सबके पास आक्रमण के लिए कोई-न-कोई शस्त्र अवश्य था। आश्रम के मुख्य द्वार की ओर मुख किए राम बैठे थे, उनके हाथ में धनुष था। उनके साथ ग्रामीण योद्धाओं की एक टोली थी, वे सब के सब सशस्त्र थे। उनके शस्त्र आश्रमवासियों से अधिक सार्थक और उपयोगी थे।"[7] लेकिन 'रामचरितमानस' में केवल राम-लक्ष्मण ही यज्ञ की रक्षा करते हैं।

अहल्योद्धार : रामकथा में यज्ञ रक्षा के बाद सिद्धाश्रम से मिथला को जाते समय बीच में विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को अहल्या की कथा सुनाता है। गौतम मुनि के आश्रम में सात दिन का उत्सव, उसमें अनेक ज्ञानी, ऋषि, मुनि, पंडित आमन्त्रित होना, देवराज के रूप में इन्द्र का भी उपस्थित होना, देवराज इन्द्र वासना से प्रेरित होकर ऋषि पत्नी अहल्या की ओर आकर्षित होना और उन्हें प्राप्त करने के लिए दृढ निश्चय करना, अवसर देखकर गौतम के आश्रम के बाहर जाते देख अहल्या पर इन्द्र अत्याचार करना, अहल्या की चीख सुनकर आश्रम से बाहर सब आश्रमवासियों का इकट्ठा होना, गौतम के सामने ही इन्द्र आश्रम के बाहर आकर कलंक को अहल्या पर मढकर भाग जाना, पत्नी को गौतम की सांत्वना, आश्रमवासी आश्रम को छोड़कर नये आश्रम में चले जाना, सीरध्वज के द्वारा अहल्या को छोडकर नये आश्रम के कुलपति बनने के लिए गौतम को आह्वान मिलना, अपने पति और पुत्र को स्वयं अहल्या ही भेज देना, समाज बहिष्कृत नारी के रूप में अहल्या आश्रम में ही तपस्या करती रहना, गौतम का नये कुलपति के रूप में देवराज इन्द्र को शाप देकर प्रतिशोध लेना आदि कथा को विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को सुनाता है और अहल्या के आश्रम के पास ले जाता है। राम आश्रम में पहुँचकर अहल्या के चरण छूता है। तब विश्वामित्र कहता है– "पुत्र! तुम मेरी अपेक्षाओं से भी उच्च हो, परे हो। जाओ देवी! तुम्हें कौशल्या के पुत्र राम का संरक्षण प्राप्त है। अब कोई भी जड चिंतक, ऋषि, मुनि, पुरोहित, ब्राह्मण, समाज नियंता

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

तुम्हें सामाजिक और नैतिक दृष्टि से अपराधी नहीं ठहराएगा।"[8] बाद में अहल्या गौतम के पास चली जाती है। वह समाज में पुन: प्रतिष्ठित होती है।

'रामचरितमानस' में यह अहल्या प्रसंग संक्षिप्त रूप से वर्णित है। गौतम के शाप से शिला बनी अहल्या राम के चरण स्पर्श से निज रूप प्राप्त करती है। मानसकार तुलसी जी ने विश्वामित्र से इतना ही कहलवाया है–

"गौतम नारी सापबस, उपल देह धरि धीर।

चरण-कमल-रज चाहति, कृपा करहु रघुवीर।।"[9]

सीता विवाह-शिव धनुर्भंग : रामकथा में सीता विवाह और शिव धनर्भंग के वर्णन में यथार्थ दृष्टि अपनाई गई है। मिथला के राजा सीरध्वज को खेत में सीता मिलती है। धरती की गोद से मिलने के कारण वह उसी की पुत्री मानी जाती है। सीता सीरध्वज की पत्नी सुनयना की गोद में डाल दी जाती है। वहीं वह पलती और फूलती है। युवावस्था में विवाह के समय सीता के असाधारण जन्म को लेकर आशंकित सीरध्वज रूपवती सीता को पाने की कोशिश करनेवाले राजाओं को रोकने के लिए उसे वीर्य शुल्का घोषित करता है और शिव धनुष संचालन के साथ जोड देता है– "उसने यह प्रण किया है कि जो कोई उस धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा देगा, अर्थात् उस यंत्र को संचालित कर देगा, सीता का विवाह उसी के साथ होगा। पुत्र! जनक ने यह सोच रखा है कि कोई भी देवता, राक्षस, नाग, गंधर्व, किन्नर उस धनुष का संचालन नहीं कर सकेगा। अत: सीरध्वज जनक यह कह सकेगा कि उसकी परीक्षा पर कोई पुरुष पूर्ण नहीं उतरा, अत: सीता अविवाहित रहेगी। तब वह आर्य राजकुलों में जामाता न पा सकने की अक्षमता के आरोप से बच जाएगा और सीता अज्ञात कुलशीलता के कारण अविवाहित रह जाने के आक्षेप से मुक्त रहेगी।"[10]

रामकथा में शिव धनुष भी यंत्र के रूप में चित्रित है। वह धनुष साधारण धनुष नहीं था। वह शिव का धनुष था। उसके द्वारा अनेक प्रकार के दिव्यास्त्र प्रक्षेपित किए जा सकते हैं। कभी महादेव शिव ने युद्ध से निरस्त होकर अपने धनुष को सीरध्वज के पूर्वजों को प्रदान किया था। इस शिव धनुष के संचालन को विश्वामित्र राम को सिखाता है।

राम और सीता का दर्शन पुष्प वाटिका में नहीं, विश्वामित्र को सीरध्वज से आह्वान मिलने पर होता है। स्वयंवर भी एक दिन का नहीं। कभी कोई आता शिव धनुष के संचालन करने का प्रयत्न करता।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'शिव धनुष भंग' की घटना भी रामकथा में विशिष्ट रूप से वर्णित है– "असाधारण आत्म विश्वास के साथ, अत्यन्त जानकार की भांति उन्होंने गुरु के निर्देशानुसार, उस यंत्र की कल पर हाथ रखा....कल का निर्माण कुछ इस ढंग से हुआ था कि कहीं कोई जोड दिखाई नहीं पडता था।.....राम ने मुट्ठी में पकडी कल को अपनी ओर खींचा। उनके बल का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, जडवस्तु अपने स्थान से नहीं हिली। राम ने प्रयत्न कर अपने शरीर की समस्त शक्ति का अपनी बाहों में आह्वान किया। कल को पूरी शक्ति से अपनी ओर खींचा। कल अब भी अपने स्थान पर स्थिर थी।.....गुरु के शब्द उनके मस्तिष्क में गूँज रहे थे– बल और कौशल, दोनों का प्रयोग....बल और कौशल दोनों....राम ने गुरु निर्देशित दूसरे उपकरण को पैरों से दबाया...शरीर की शक्ति दो भागों में बंट रही थी। कमर से नीचे का शरीर पैरों के नीचे के उपकरण को दबा रहा था, और कमर के ऊपर का शरीर हाथ में पकडी कल को अपनी ओर खींच रहा था।.....अपूर्व शक्ति संतुलित प्रयोग बल, कौशल, ज्ञान और संतुलन....राम के शरीर की पेशियाँ कठोर होती जा रही थीं। शरीर सधता जा रहा था। सारा रक्त जैसे चेहरे पर संचित होता जा रहा था....राम के पैरों के नीचे की कल धंसी और तक्षण ही हाथ की कल अपने स्थान से डोली....उस विराट यंत्र का एक खण्ड अकस्मात ही ऊपर उठता जा रहा था....शिव धनुष अब जड नहीं था, वह सक्रिय हो उठा था। भुजा क्रमश: ऊपर उठ रही थी....इससे पूर्व कि उस यंत्र में कोई अन्य परिवर्तन होता, अथवा वह फिर से पूर्ववत् जड हो जाता राम अपने हाथों में पकडी कल के सहारे प्राय: झूल-से गए और अपने दोनों पैरों की सम्मिलित शक्ति से उन्होंने एक विकट प्रहार किया। साथ ही वे कूदे और यंत्र से कई पग दूर जाकर खड़े हो गए। यंत्र का आत्म-विस्फोटक तत्व प्रेरित हो चुका था। निमिष मात्र का भी समय नहीं लगा। किसी बंद पात्र के भीतर गूंजनेवाले विस्फोट का-सा भयंकर शब्द हुआ और अजगव के दो खण्ड हो गए।"[11]

'मानस' में भी सीता विवाह को लेकर विस्तार से वर्णन है। वहाँ राम के अवतार रूप को ही दर्शाया गया है। शिव धनुष भी यंत्र नहीं, स्वयंवर भी एक ही दिन में होता है, पुष्प वाटिका में सीता और राम का प्रथम मिलन होता है। राम शिव धनुष को चढाते हैं तो सीता उनकी ओर कटाक्षपूर्ण दृष्टि से देखती है, जबकि रामकथा में शिव धनुष संचालन के लिए प्रयत्न करनेवाले राम को देखकर तथा राम की पीड़ा देखकर स्वयं सीता पीडित होती है।

परशुराम का प्रसंग : कोहली जी की रामकथा में परशुराम का चित्रण एक अंतर्मुखी आत्म प्रशंसक हठी एवं असहिष्णु व्यक्ति के रूप में हुआ है। वे अपनी बात को ही कहते रहते हैं, दूसरों की नहीं सुनते हैं। परशुराम शिवधनुर्भंग की बात

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

जानकर आकाश मार्ग में यान में आकर राम के सामने खड़े हो जाते हैं। पहले लक्ष्मण ही परशुराम के प्रश्नों का समाधान देते हैं और परशुराम को चिढाते हैं। परशुराम का क्रोध बढ़ जाता है, तो राम उन्हें शांत करता है और फिर वैष्णव धनुष का संचालन करता है तो, परशुराम आशीर्वाद देकर चला जाता है।

'मानस' में भी लक्ष्मण की वाचालुता, परशुराम का क्रोध, राम के शांतपूर्ण वचन, राम के अवतार को जानना आदि का चित्रण है। रामकथा में परशुराम पहले से क्रुद्ध होकर आते हैं लेकिन 'मानस' में मिथिला पहुँचने पर ही उन्हें शिव धनुर्भंग का समाचार मिलता है। लक्ष्मण भी पहले से क्रुद्ध नहीं दिखाई देता।

दशरथ का शासन : कोहली जी की रामकथा में दशरथ के असफल शासन का चित्रण है। सेना नायकों को राक्षसों की ओर से रिश्वत मिलती है। स्वयं विश्वामित्र दशरथ से कहता है– "मैंने तो सुना है कि अनेक बार ये राक्षस तथा उनके मित्र शासन प्रतिनिधि को पहले से ही सूचित कर देते हैं कि वे लोग किसी विशिष्ट समय पर, विशिष्ट स्थान पर, कोई अत्याचार करने जा रहे हैं– शासन-प्रतिनिधि को चाहिए कि वह उस समय, अपने सैनिकों को उधर जाने से रोक ले; और शासन प्रतिनिधि वही करता है....इस कृपा के लिए शासन प्रतिनिधि को पूर्ण पुरस्कार दिया जाता है।"[12]

दशरथ के राज्य की सीमा के भीतर के एक गाँव में स्थित 'गहन' नामक निम्न जाति के व्यक्ति की कुटिया में घुसकर आर्य युवकों का एक दल 'गहन' को बांधकर, उसके सामने ही उसकी पत्नी तथा पुत्र-वधुओं को नग्नकर शीलभंग करता है, जीवित गहन को जलाकर स्त्रियों के मर्मांगों पर चिह्न बनाये जाते हैं।[13] उनके अत्याचारों से अवगत होकर यज्ञ रक्षा के बाद अपने सेनापति बहुलाश्व तथा उसके पुत्र देवप्रिया को राम-लक्ष्मण मार देते हैं। 'मानस' में इस प्रकार का चित्रण नहीं है। दशरथ के आदर्श शासन का ही चित्रण मिलता है।

राम के युवराज्यभिषेक और निर्वासन : कोहली जी की रामकथा में दशरथ कैकेयी को ब्याहते समय कैकेयी के पिता को कैकेयी के पुत्र को युवराज्याभिषेक करने का वचन देता है। कैकेयी के भय से राम की न्यायप्रियता की ओर दशरथ झुकता है। जब भरत और शत्रुघ्न ननिहाल गये हैं तब ही राम का युवराज्याभिषेक करना चाहता है। वह भी प्रमुख व्यक्तियों को ही बताकर। कैकेयी को भी यह मालूम नहीं होता है। जब मंथरा कैकेयी को विषय बताती है तो कैकेई प्रसन्न होती है मगर, दशरथ की शंका समझ में आते ही वह क्रोधित होती है और दशरथ से राम के निर्वासन 14 साल के लिए और भरत के युवराज्याभिषेक के दो वर, जो शंबर युद्ध के बाद दशरथ ने दिये थे, माँगती है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'मानस' में कैकेयी मंथरा की बातों में आकर स्वार्थवश दशरथ से दो वर माँगती है, जबकि रामकथा की कैकेयी प्रतीकार करने के लिए माँगती है। रामकथा के दशरथ में कैकेयी के प्रति शंका होती है। भरत के अपने नाना के घर चले जाने पर उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर युवराज पद पर राम का अभिषेक करना चाहता है।– "उसे तत्काल अभिषेक करवाना होगा.......युधाजित की तैयारी से पूर्व, भरत के लौटने तथा कैकेयी को गंध मिलने से पहले।"[14]

लेकिन 'मानस' में राम के युवराज्याभिषेक को लेकर कूटचक्र का संकेत नहीं है। इसमें इस घटना को रहस्य भी नहीं रखते। समाचार पाकर सब माताएँ पहले प्रसन्न ही होती हैं।

राम के निर्वासन की प्रतिक्रियाएँ : राम के निर्वासन को लेकर रामकथा और 'मानस'के पात्रों की प्रतिक्रियाएँ भिन्न हैं जो उपन्यासकार के मौलिक विचारों को स्पष्ट करती हैं।

राम की प्रतिक्रिया : रामकथा और 'मानस' में राम की प्रतिक्रिया को लेकर बहुत कम अंतर ही दिखाई देता है। रामकथा में राम कैकेयी द्वारा दिये गये निर्वासन आदेश को अपना कर्त्तव्य स्वीकार करता है। राम माता सुमित्रा के सामने कहता है– "आदेश की बात मैं नहीं कहता। राम मुस्कराए, अपने कर्त्तव्य की बात कहता हूँ। उसी के पालन के लिए जा रहा हूँ।"[15] इतना ही नहीं राम कैकेयी के संदेश को समझ नहीं पाता है– "पर चौदह वर्षों का वनवास क्यों? वर्ष-दो वर्षो का क्यों नहीं? क्या कैकेयी समझती है कि चौदह वर्षों का समय इतना लंबा है कि इस बीच सम्राट का देहावसान हो जाएगा और भरत अयोध्या में अच्छी तरह अपने पैर जमा लेगा तथा अयोध्या के लोग राम को भूल जायेंगे......हाँ, इतना समय पर्याप्त था।"[16]

'मानस' में राम निर्वासन आदेश को बडे उत्साह के साथ स्वीकार करता है क्योंकि, वहाँ राम में धर्म-स्थापना की अंत:प्रेरणा रहती है साथ ही, इस काव्य के राम अवतार पुरुष हैं और राक्षस संहार उनका लक्ष्य था। अपनी माँ के सामने राम कहता है–

"धरमधुरीन धरमगति जानी, कहेउ मातु सन अति-मृदु बानी।।
पीता दीन्ह मोहि कानन राजू, जहँ सब भाँति मोर बड काजू।।
आयसु देहि मुदित मन माता, जेहि मुद मंगल कानन जाता।।
जनिस नेह बस डर पसि भोरे, आनँदु अंब अनुग्रह तोरे।।"[17]

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

कौसल्या की प्रतिक्रिया : यथार्थवाद और आदर्शवाद के द्वन्द्व के कारण रामकथा और 'रामचरितमानस' में कौसल्या की प्रतिक्रिया को लेकर अंतर दिखाई पड़ता है। कोहली की कौसल्या दुर्बल और भयकंपित दिखाई पड़ती है। जब राम आकर माता से कहता है– "'माँ! पिता प्रदत्त दो पूर्वतम वरदानों के आधार पर माता कैकेयी ने भरत को अयोध्या का राज्य और मुझे चौदह वर्षों के लिए दंडकारण्य का वास दिया है।' कौसल्या ने अचकचा, पलके झपक-झपक कर राम को देखा।......कौसल्या स्तम्भित खड़ी रह गई। उनकी सांस जहाँ की तहाँ थम गई। प्राण शक्ति जैसे किसी ने खींच ली। वर्ण सफेद हो गया और माथे पर स्वेद कण उभर आये। अपनी जीभ से होंठों को गीला करने में भी उन्हें एक युग लग गया।.....राम ने झुककर कौसल्या के चरण छुए। 'तुम वन जाने का निश्चय त्याग नहीं सकते, पुत्र?' कौसल्या कातर हो उठी। असंभव! राम का स्वर दृढ था। कौसल्या ने भयभीत दृष्टि से राम को देखा। उनके चेहरे की दृढता से, कौसल्या के मन की आशा का आधार जैसे अर्राकर गिर पडा और साथ ही उनका शरीर भी झटके से भूमि पर पसा आया। सुमित्रा और राम ने लपककर, कौसल्या को संभाला और पलंग पर लिटा दिया।"[18]

'मानस' की कौसल्या धीर, गंभीर और धर्म तथा कर्त्तव्य को माननेवाली तथा कैकेयी के प्रति अत्यधिक सम्मान रखनेवाली माता के रूप में चित्रित है। वह राम से कहती है कि यदि केवल पिता की ही आज्ञा हो, तो माता को पिता से बड़ी जानकर वन में न जाओ। किंतु यदि माता और पिता दोनों ने वन जाने के लिए कहा हो, तो वन तुम्हारे लिए सैकडों अयोध्या के समान है–

"जो केवल पितु आयसु ताता, तौ जनि जाहु जानि बडि माता।।
जी पितुमातु कहेउ बन जाता, तौ कानन सत-अवध-समाना।।"[19]

भरत की प्रतिक्रिया : कोहली की रामकथा में भरत की वेदना का चित्रण नहीं है। इसमें पितृ वियोग और भाई वियोग की पीडा से व्याकुल भरत का चित्रण नहीं हो पाया है। उनकी मनोवेदना केवल एक जगह पर ही प्रकट होती है, जब वाल्मीकि ग्राम का नेता ब्रह्मचारी 'चेतन' राम के पास यह समाचार लेकर आता है– "भद्र! अयोध्या का समाचार है।– क्या? भरत लौट आए हैं। उन्होंने अपने अभिषेक का विरोध किया है, आपको मनाकर वापस अयोध्या ले जाने के संकल्प की घोषणा की है।"[20] इसमें भी भरत की वेदना स्पष्ट नहीं होती है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'मानस' में भरत की वेदना को लेकर विस्तार से वर्णन मिलता है। पिता की मृत्यु और भाई-निर्वासन का समाचार सुनकर भरत पीड़ा से व्याकुल हो जाता है। रामजी के वन जाने की खबर सुनकर भरत पिता के मरण तक को भूल जाता है–

"भरत हि बिसरेउ पितु मरन, सुनत राम-बन-गौनु।

हेतु अपनपउ जानि जिय, थकित रहे धरि मौनु।।"[21]

माता कैकेयी को गालियाँ देकर, राम को फिर अयोध्या वापस लिवा लाने के लिए निकले भरत जहाँ राम और सीता ने विश्राम किया था, उस स्थान को देखकर भावविभोर हो जाता है। वाहनों को त्याग कर भाई राम की तरह ही पैदल जाता है। 'मनस' में भरत की प्रतिक्रिया के चित्रण से राम के प्रति भरत के मन में स्थित भातृप्रेम स्पष्ट होता है।

चित्रकूट प्रकरण : चित्रकूट के पास भरत पहुँचता है तो भरत के मंतव्य के बारे में लक्ष्मण के क्रोध का चित्रण रामकथा तथा 'मानस' में मिलता है। रामकथा का लक्ष्मण कहता है– "पर भैया, यह न भूले कि भरत कैकेयी का पुत्र है।"[22]

लेकिन 'मानस' का लक्ष्मण भरत के साथ शत्रुघ्न को भी इस कुचक्र में सम्मिलित समझता है और घोषणा करता है कि आज युद्ध में अच्छा सबक सिखाऊँगा।[23]

रामकथा के राम में भरत के प्रति प्रतिशंका होती है। गुह-प्रसंग में राम गुहराज से कहता है– "संभावना बहुत कम है......किंतु यदि हमारा अनिष्ट करने के लिए भरत ने इस ओर सैनिक अभियान किया तो तुम बाधा दोगे, और चित्रकूट में हमें इसकी सूचना भिजवा ओगे।"[24]

सेना सहित आनेवाले भरत को देखकर रामकथा के राम-लक्ष्मण दोनों ही युद्ध की संभावना के बारे में सोचते हैं– "जैसे-जैसे भरत के निकट आने के समाचार मिलते जा रहे थे जिज्ञासाओं की भीड भी बढती गयी थी।.......निकट के विभिन्न आश्रमों से सूचनाएँ मिली कि भरत की सेना आ पहुँची है। लक्ष्मण ने कवच कस लिया और अनेक दिव्यास्त्रों से सज्जित हो गए। उन्होंने आश्रम के पिछले मार्ग से मुखर को, उद्घोष के ग्राम की ओर दौडा दिया कि वह विभिन्न ग्रामों तथा आश्रमों में से सशस्त्र युवकों को एकत्रित कर शीघ्रातिशीघ्र पहुँचे।"[25]

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'मानस' में भरत के प्रति कोई शंका उत्पन्न नहीं होती है। राम भरत को अयोध्या लौट जाने के लिए बाध्य करता है। रामकथा में ऐसा चित्रण कहीं भी नहीं है। चित्रकूट प्रसंग का वर्णन इस प्रकार है– "भरत अयोध्या और मिथिला के राज-परिवार, मंत्रि-परिषद्, पुरोहित वर्ग, प्रमुख प्रजाजन, सेनापति, सैनिक परिषद् तथा सेना की अनेक टुकडों लेकर उन्हें लिवाने आये थे। वे तत्काल राम का राज्याभिषेक करना चाहते थे।.......किंतु एक बात के लिए भरत एक दम सजग नहीं थे। भरत के साथ-साथ भरद्वाज, वाल्मीकि तथा अनेक ऋषि भी आए थे। जो ऋषि आ नहीं पाए थे– राम जानते थे– उनके चर आश्रम के चारों ओर मँडरा रहे थे। वे भयभीत थे, कहीं राम भरत की बात न मान ले।......जब संपूर्ण राजवंश एक स्वर में कह रहा था कि राम अयोध्या लौट चलें– एक भी ऋषि इस इच्छा का समर्थन नहीं कर रहा था।......अंत में भरत को निराश लौट जाना पडा। अयोध्या से लाई गई राजसी-खडाऊओं को वे राम के चरणों से हुआ भर सके, उन्हें पहना नहीं सके।"[26]

शूर्पनखा प्रसंग : रामकथा और 'रामचरितमानस' में शूर्पनखा प्रसंग को लेखर बहुत अंतर है। कोहली जी की रामकथा में शूर्पनखा प्रौढ स्त्री है और उसके शरीर में बुढापे की छाया कहीं-कहीं दिखायी पड़ रही थी। रूप सज्जा के द्वारा शूर्पनखा आकर्षक बनने की चेष्टा करती रहती है। पहले वह राम को देखकर राम से विवाह का प्रस्ताव रखती है, लेकिन राम उसे बताता है कि वह विवाहित है और उसे स्वीकार नहीं कर सकता। फिर भी वह राम का पीछा नहीं छोडती। वृक्षों में छिपकर राम को निहारती रहती है, लंका से रूप सज्जा कलाकारों को बुलाकर रूपवती बनने की चेष्टा करती है और राम के पास जाकर विनती करती है, तो राम लक्ष्मण को अविवाहित बताता है– "मैं विवाहित हूँ उनका स्वर पुन: कोमल हो गया, अत: तुम्हें अंगीकार नहीं कर सकता। किन्तु मेरा छोटा भाई अविवाहित है, सौमित्र।"[27]

लेकिन लक्ष्मण भी शूर्पनखा का तिरस्कार कर देता है, तो शूर्पनखा सीता को इस तिरस्कार का कारण समझकर उस पर हमला करती है– "यह स्त्री उसके अपमान का कारण तो है ही– यही उसके मार्ग की बाधा भी है। इसके रहते हुए शूर्पनखा को कभी सुख नहीं मिल सकता; राम अथवा सौमित्र में से कोई भी उसे नहीं अपनाएगा। इस स्त्री को नहीं रहना चाहिए, इसे मर जाना चाहिए, इसे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है।"[28] तब लक्ष्मण शूर्पनखा को नीचे डकेल देता है और दण्ड स्वरूप उसकी नासिक और श्रवणों पर खड्ग की एक सूक्ष्म देखा बना देता है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'मानस' में यौवन वेग से पीडित शूर्पनखा के प्रणय प्रस्ताव असफल होने पर, सीता को खा जाने की धमकी से राम उत्तेजित हो जाता है और लक्ष्मण को उसे कुरूप करने के लिए आज्ञा देता है।

खर-दूषण का वध : रामकथा में राम सामान्य मानव योद्धा के रूप में खर-दूषण से युद्ध करता है। जनसैनिक भी राक्षसों से युद्ध करते हैं। राम घायल भी होता है। अंत में खर-दूषण का वध राम कर देता है– "राक्षसों की पराजय तथा खर के वध की सूचना जहाँ-जहाँ पहुँचती थी, वहीं झुण्ड के झुण्ड राम से मिलने के लिए आ रहे थे।"[29]

'मानस' में कवि ने इस प्रसंग में अलौकिकता का समावेश किया है। खर-दूषण और उनकी सेना जो राम से लडने आते हैं, राम के रूप को देखकर मुग्ध हो जाते हैं–

"नाग असुर सुर नर मुनि जे ते, देखे जिते हते हम केते।।

हम भरि जनम सुनहु सब भाई, देखी नहिं असि सुन्दर ताई।।"[30]

युद्ध में राक्षस माया युद्ध करते हैं। तब राम भी ऐसी माया करते हैं कि राक्षस आपस में ही लड मरते हैं। यह अलौकिक है। राम के हाथों में मर कर वे स्वर्ग चले जाते हैं।

अगस्त्य प्रसंग : कोहली जी की रामकथा में अगस्त्य ऋषि की कथा भी है, लेकिन 'मानस' में नहीं है। कोहली जी के अगस्त्य ऋषि, आर्यों और वानरों के बीच स्थित झगडों को समाप्त करने के लिए, आर्यों से यह वचन लेते हैं कि जब तक वे वापस नहीं लौटेंगे तब तक विरोध रूपी विंध्याचल को बढाए– "तुम लोग आत्म रक्षा के लिए सन्नद्ध रहो। चौकन्ने रहकर अपने मनुष्यों, पशुओं और देश की रक्षा करो, किन्तु आक्रमण की योजना स्थगित रखो। मैं विंध्याचल के पास जा रहा हूँ जब तक लौटकर न आऊँ, आक्रमण की बात मन में मत लाना। विरोध को मत बढाओ। विंध्याचल को ऊँचा मत करो।"[31] बाद में वानरों के तथा आर्यों के बीच विरोध उत्पन्न करनेवाले कालकेय राक्षसों के बारे में बताता है तथा नौका बनाकर राक्षसों के पीछे पडे तो वानर यह देखकर पुकारने लगते हैं कि अगस्त्य समुद्र को पी गये।[32]

रामकथा का मुखर : कोहली जी की रामकथा में मुखर का चित्रण राम के साथी के रूप में हुआ है। उसका गाँव गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी के पास था। राक्षसों ने उसके गाँव को उजाड दिया, तो मुखर भागता हुआ वाल्मीकि आश्रम पर राम से मिला। राम से अस्त्र विद्या सीखकर राम के अनुयायी होकर राक्षसों के विरुद्ध लडा। खर-दूषण के साथ हुए युद्ध में मुखर प्रमुख रूप से लडा। खर-दूषण के अंत से मुखर के मुख पर आनंद उभर पडा था। जब रावण सीता का

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

हरण करने के लिए पंचवटी में आया तो मुखर ने पहले रावण से जा टकराया– "अब तक मुखर भी स्थिति समझ चुका था। उसने अपना खड्ग खींच लिया था और प्रहार करने जा रहा था। किन्तु आक्रमणकारी उससे कहीं अधिक फुर्तीला और दक्ष था। आक्रमणकारी का खड्ग भयंकर गति से ऊपर उठकर नीचे गिरा। मुखर धराशायी हो गया......उसका शरीर नि:स्पंद था।"[33]

मुखर की मृत्यु का समाचार सुनकर लक्ष्मण क्रोधित हुआ तो राम भी बहुत दुखी हुआ।[34] बाद में राम-लक्ष्मण मुखर का अंतिम संस्कार कराते हैं। 'मानस' में मुखर का उल्लेख तक नहीं मिलता है।

सीता-हरण प्रसंग : खर-दूषण के वध के पश्चात् रावण के द्वारा हुई सीता के हरण की घटना का चित्रण रामकथा और 'मानस' में भिन्न रूप से चित्रित है। कोहली की रामकथा में शूर्पनखा-विरूपीकरण और राम के पराक्रम की सूचना पहले 'अंकपन' नामक राक्षस से रावण को मिलती है। वह सीधा राम से युद्ध करना चाहता है, मगर शूर्पनखा की मंत्रणा से जनस्थान में राम से युद्ध करने की बात छोड़ देता है। तब शूर्पनखा रावण को सीता की सुंदरता के बारे में बताकर उसका हरण करने के लिए प्रेरित करती है– "इतना सुंदर है? रावण, फिर से आत्मलीन हो गया। शूर्पनखा समझ गयी कि रावण का मन उसकी मनोवांछित दिशा में गतिशील हो चुका था.....सीता का हरण करवा लों, शूर्पनखा रावण के कानों फुफकारी।"[35]

रावण सीता-हरण करने के लिए मारीच नामक राक्षस की सहायता लेता है। वह साधु का वेष धारण करके पंचवटी में राम के आश्रम में आता है। राम उसका स्वागत करता है, तो मारीच स्वर्ण मृग चर्म को निकाल कर बिछाता है, तो सीता आकर्षित होकर आसक्ति दिखाती है, तो मारीच जंगल में अनेक स्वर्ण मृग होने की बात कहता है। सीता मारीच के प्रलोभ में आकर राम से स्वर्ण मृग को लाने के लिए कहती है। मारीच स्वर्ण मृग को दिखाने के लिए राम को साथ बुला ले जाता है और काफी दूर जाने के बाद वह दौडते हुए राम से आगे जाता है, तो राम उसके पीछे भागता है। काफी दूर जाने के बाद मारीच 'अहा! लक्ष्मण' कहकर पुकारता है। राम मारीच को मार देता है और राक्षसों के कपट को जान लेता है। मगर मुखर और लक्ष्मण आश्रम में रहने की बात सोचकर नहीं डरता है। मारीच की पुकार को सुनकर सीता व्याकुल होती है, लक्ष्मण जाने से मना करने पर कटुवचन कहती है और स्वयं जाने की बात कहती है, तो लक्ष्मण मुखर को वहाँ रखकर राम को ढूँढते हुए जंगल में जाता है। कोई रेखा नहीं खींचता है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'मानस' में मारीच ही स्वर्ण मृग बनता है। राम उसे मारता है, तो वह लक्ष्मण का नाम लेकर पुकारता है। सीता लक्ष्मण से राम की सहायता करने जाने के लिए कहती है, तो लक्ष्मण नहीं मानता है। सीता कटुवचन कहती है, तो लक्ष्मण आश्रम के द्वार पर रेखा खींच कर बाहर न आने के लिए कहकर चला जाता है। आश्रम में सीता के अलावा कोई नहीं रहता है।

कोहली की रामकथा में लक्ष्मण के जाने के बाद रावण आश्रम के पास आता है, तो मुखर उसका सामना करता है। रावण मुखर का वध कर देता है और सीता की ओर दौडता है, तो सीता धनुष-बाण लेकर युद्ध करती है। एक बाण रावण को लगता भी है। फिर भी वह सीता को पकडकर कंधे पर उठाकर भागता है और दूर पर खडे किये रथ में चढ़ता है। जटायु यह देखकर रावण को रोकने का प्रयत्न करता है, तो रावण जटायु को खूब मारकर और धराशायी करके रथ पर वेग से भाग जाता है। जटायु ही राम को 'रावण' का नाम बताकर मर जाता है।

'मानस' में रावण साधु वेश में आकर नाना प्रकार की कथाएँ सुनाकर सीता को रथ पर बिठाकर आकाश मार्ग से चल पडता है।[36] 'मानस' के अनुसार राम का जन्म राक्षसों के नाश के लिए हुआ है और उस के लिए सीता-हरण आवश्यक हो जाता है।

सुग्रीव से भेंट एवं वालि वध : कोहली की रामकथा और 'मानस' में इस प्रसंग को लेकर कुछ भिन्नता दिखाई पडती है। राम एवं सुग्रीव की भेंट हनुमान द्वारा कराई जाती है। रामकथा में भेंट के बाद राम और सुग्रीव एक दूसरे की सहायता करने के लिए तैयार हो जाते हैं– "सुग्रीव! आज से हम-तुम बन्धु हुए। तुम मुझे लक्ष्मण के समान प्रिय रहोगे। एक-दूसरे के सुख-दु:ख में हम सह-भागी होंगे। तुम्हारा मित्र मेरा भी मित्र होगा और तुम्हारा शत्रु मेरा भी शत्रु होगा।"[37] सुग्रीव के मुख पर स्थित दु:ख में अपने दु:ख का साम्य राम देखता है– "सुग्रीव! तुम्हारा चेहरा मेरे अपने हृदय का दर्पण है। स्त्री के अपहरण की पीडा और अपमान को जितना मैंने अपनी अनुभूति से जाना है, उतना ही तुम्हारे मुख-मंडल से भी जाना है।"[38]

'मानस' में राम-लक्ष्मण ही हनुमान से मिलते हैं। प्रभु राम को हनुमान भक्ति के कारण पहचानता है और सुग्रीव के पास ले जाता है। राम सुग्रीव की कथा को सुनकर सहायता करने का वचन देता है। सुग्रीव वालि के क्रोध का कारण

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

बताते हुए मायावी की घटना का वर्णन करता है। 'मानस' का मायावी मयपुत्र है। वह कोहली के मायावी के समान लंका का राक्षस, शराब एवं स्त्रियों का व्यापारी नहीं है। 'मानस' में वालि उसे युद्ध में मार डालता है।

सुग्रीव की सहायता के लिए राम के द्वारा छिपकर वालि का वध करने की कथा रामकथा और 'मानस' में लगभग समान है। मगर राम द्वारा वालि के समाधान दिये जाने में अंतर है। इतना ही नहीं, सुग्रीव को पहचानने के लिए 'मानस' के राम ने सुग्रीव के गले में फूलों की माला पहना दी।[39] जबकि रामकथा के राम जयमाला के रूप में फूलों की माला डालता है, तथा सुग्रीव को मल्लयुद्ध भी राम सिखाता है। जब राम वालि पर राम-बाण चलाता है, तो वालि धराशायी हो जाता है। राम को देखकर वालि प्रश्न करता है कि 'छिपकर क्यों मुझे मारा।' जवाब में रामकथा के राम कहता है– 'न्याय की बात करने का अधिकार तुम को नहीं है, पापी।' राम तेजोद्दीप्त स्वर में बोले– 'असहाय, निरीह रूमा का अपहरण तुम ने किस न्याय और वीरता से किया था?' राम क्षण भर रुके, "अत्याचारियों द्वारा अपनी सुविधा के लिए किये गये उद्घोषों के समूह का नाम न्याय नहीं है। तुम ने अपनी निरीह प्रजा पर जो अत्याचार किये हैं, उनके पीछे कौन-सा न्याय था? न्याय सदा जनहित में होता है। मैं तुम्हारे द्वारा परिभाषित न्याय और वीरता के जड स्वरूप को प्रमाणित करने के लिए, तुम्हारे हाथों, तुम से दुर्बल सुग्रीव को मरते हुए देखता रहता तो वह न्याय होता? तुम जैसे पापियों को तो न्याय माँगने का अधिकार भी नहीं है। तुम्हारा न्याय तुम्हारी मृत्यु ही है।"[40]

हनुमान द्वारा समुद्र संतरण : कोहली की रामकथा तथा 'मानस' में इस प्रसंग को लेकर बहुत अंतर है। 'मानस' के हनुमान समुन्दर को आकाश मार्ग से पार करता है, तो कोहली जी के हनुमान समुन्दर को तैर कर पार करता है। रामकथा के अनुसार हनुमान सहित वानर-सेना दक्षिण की दिशा में आगे बढ़ती है। कुछ दिनों के बाद एक दिन उन्हें प्यास लगी तो पानी नहीं मिला। हनुमान एक गुफा से पक्षी निकलते देख उस में घुसता है, तो वह रास्ता सीधा एक उपवन में ले जाता है। वहाँ उन्हें एक स्त्री मिलती है। वह उसे खाने के लिए फल तथा समुन्दर के पास जाने का आसानी रास्ता बताती है। तब सब समुन्दर के पास जाते हैं। जटायु के भाई संपाति से भी सीता का समाचार मिलता है। सागर को लांघने में सबको असमर्थ पाकर हनुमान तैयार होता है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

'मानस' में भी इसी प्रकार का वर्णन है। कुछ अलौकिक घटनाएँ भी हैं। जैसे सूरज की गरमी से जले पंखवाले संपाति को सीता के बारे में हनुमानादि को बताने के बाद फिर पंख निकल आना, समुद्र के इस पार से अशोक वन में स्थित सीता को संपाति गिद्द होने के कारण देख सकना, समुद्र को लांघकर जाने के बारे में सब अपनी असमर्थता व्यक्त करने पर हनुमान पर्वताकार रूप धारण कर तैयार होना आदि हैं।[41]

कोहली जी का हनुमान लंका जाने के लिए समुद्र में कूद कर तैरने लगता है। तैरेते-तैरते वह महेन्द्रगिरि के पास जाता है और वहाँ पर स्थित सर्पों से तथा शिला खण्डों से बचकर आगे बढ़ता है। तैरनेवाले हनुमान का चित्रण इस प्रकार है- "हनुमान के शरीर पर उत्तरीय नहीं था। बहुत आवश्यक होने पर ही वे उत्तरीय लेते थे, अन्यथा काम-काज में बाधा मानकर, उससे मुक्त ही रहते थे। धोती को यद्यपि उन्होंने कस रखा था, किन्तु तैरने में कदाचित् वह विघ्नकारक हो, सोचकर उन्होंने उसे घुटनों से भी ऊपर समेटकर कमर से भली प्रकार कस लिया। हाथ से टटोलकर देखा- राम की दी हुई मुद्रिका सुरक्षित थी।"[42]

मैनाक पर्वत को पार करने के बाद हनुमान को एक पर्वताकार साँप दिखाई पडता है। वह सर्प हनुमान को निगलने के लिए तैयार होता है। वह नाग माता सुरक्षा के आकार का विराट सर्प था। सर्प को काफी परेशान करने के बाद हनुमान सीधे सर्प के मुख के पास जाता है, तो वह सर्प मुख खोलता है। हनुमान धनुष से छूटे बाण के समान उसके खुले मुख के निकट से होते हुए आरपार निकल जाता है। काफी दूर तैरने के बाद सिंहिका जैसी जल राक्षसी हनुमान को खाने आती है। हनुमान उससे लडने तथा बचने का प्रयत्न करता है। वह मंडुकाकार में बैठकर सिंहिका के मुख में जाता है और सीधा खडा जाता है। वह जल दैत्य मुख को बन्द करने लगता है, तो हनुमान उसे घायल कर मुख से बाहर निकलता है।[43] बाद में हनुमान लंका पहुँच जाता है। वहाँ लंका राक्षसी हनुमान को रोकती है, तो हनुमान उस राक्षसी से लडकर आगे बढ़ता है।

'मानस' में इस घटना को अलौकिक बना दिया गया है। 'मैनाक पर्वत' अधिक ऊपर बढ़कर हनुमान को विश्राम देना चाहता है, तो हनुमान अस्वीकार करके आगे बढ़ता है। देवता हनुमान की परीक्षा लेने के लिए सुरसा नामक सर्प राज को हनुमान से ठकराने के लिए भेजते हैं, तो हनुमान अपने शरीर को बढ़ाकर बाद में छुद्र रूप धारण करके उसके मुह में

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

घुसकर फिर बाहर निकल आता है। बाद में वह सर्प हनुमान को आशीर्वाद देकर चला जाता है। बाद में आकाश में जानेवाले पक्षियों को भी मारने वाली राक्षसी को भी मारकर हनुमान लंका पहुँच जाता है।[44]

लंका दहन : कोहली की रामकथा और मानस में इस प्रसंग को लेकर अंतर है। 'मानस' में हनुमान मच्छर जैसे रूप धारण कर लंका में प्रवेश करता है और घर-घर में देखता है, सोये हुए रावण को भी देखता है। विभीषण के घर में हनुमान ब्राह्मण का रूप धारण कर विभीषण से बातचीत करता है। राम की कथा सुनकर विभीषण पुलकित होता है। विभीषण ही सीता से मिलने का उपाय हनुमान को बताता है–

"जुगति विभीषन सकल सुनाई, चलेउ पवनसुत विदा कराई।।"[45]

बाद में हनुमान अशोक वन में सीता के यहाँ जाता है। तब ही रावण वहाँ आकर सीता से अपने को स्वीकार करने के लिए कहता है, तो सीता रावण की निंदा करती है। रावण के जाने के बाद त्रिजटा अपने स्वप्न के बारे में राक्षसियों को बताती है कि रावण का वध होगा, विभीषण लंकाधिपति होगा और राम की विजय होगी। बाद में हनुमान राम की अँगूठी को नीचे गिराकर सीता से मिलता है। हनुमान राम के गुणगाण करता है। राम का संदेश सुनाता है। सीता के संदेह को मिटाने के लिए हनुमान ने अपने शरीर को बढ़ाता है। बाद में हनुमान सीता की अनुमति पाकर अशोक वन के फलों को खाते, वृक्षों को उखाडने लगता है, तो राक्षस जाकर रावण को समाचार देते हैं। पहले अक्षय कुमार आता है और मारा जाता है, बाद में मेघनाद आकर हनमान से खूब लडता है। अंत में ब्रह्मास्त्र के कारण हनुमान मूर्छित-सा होता है, तो वह नाग पाश में बांध कर रावण के पास ले जाता है। रावण के पूछने पर हनुमान राम के संदेश को सुनाता है। क्रोधित रावण को विभीषणादि के समझाने के बाद उसके अंगभाग यानी पूँछ पर कपडा बांधकर आग लगाने के लिए कहता है। उसी आग की सहायता से हनुमान लंका को जलाता है।

कोहली जी की रामकथा में हनुमान वानर जाति का है। उसकी कोई पूँछ नहीं है। वह लंका नगर में राक्षसों से बातचीत करता है। नगर के प्राचीर को चढते समय घायल होता है, राक्षसों से जानकर ही रावण के भवन में प्रवेश कर सोये रावण को देखता है, बाद में राक्षसों से जानकर ही अशोक वन में पहुँचता है। बाद का वर्णन 'मानस' जैसा ही है।

सेतुबन्ध : कोहली जी की रामकथा एवं 'मानस' में सेतुबन्ध निर्माण का चित्रण भिन्न रूपों में हुआ है। मानसकार ने अलौकिकता को साथ लेकर चित्रण किया है। सेतुबन्धन के समय राम का समुद्र पर क्रोध करने का, राम के बाण से

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

भयग्रस्त समुद्र राम की शरण में आने का और नल-नील के बारे में बताने का वर्णन है। बाद में नल और नील सेतु का निर्माण करते हैं जिनके स्पर्श से पत्थर पानी पर तैरते हैं।

कोहली जी की रामकथा में इस प्रसंग की अलग कल्पना की गयी है। जब राम सारा दिन समुद्र के किनारे हताश होकर घूमता है, तब उसको यह सुझाव नल, जो समुद्र जल का विशेषज्ञ है, के द्वारा मिलता है कि वह समुद्र का प्रवाहहीन स्थल, स्तिया, खोजकर उसमें व्यापारियों और जल दस्युओं के पोतों को पत्थरों से भरकर डुबोने पर समुद्र पर सेतु आसान होता है। ऐसे ही सेतु का निर्माण होता है। सब समुद्र को पारकर लंका के किनारे पर पहुँचते हैं।

युद्ध के पहले रावण का कपट : इस प्रसंग का वर्णन रामकथा में है मगर 'मानस' में नहीं है। रामकथा में रावण मंत्रियों के परामर्श लेकर युद्ध के लिए पूरे आत्म विश्वास के साथ तैयार होता है। वह सीता को राम की ओर से निराश करने के लिए सुबह ही सीता के पास जाकर राम का वध कर देने की बात कहता है, तो सीता भयकंपित हो जाती है– "सागर पार करते-करते बेचारा बहुत थक गया था। युद्ध से पहले थोडा विश्राम कर लेना चाहता था; इसलिए सागर के दक्षिण तट पर सेना-सहित गहरी नींद में सो रहा था। मैंने सोचा, प्रात: उठकर युद्ध करेगा तो पुन: थक जाएगा। इसलिए मैंने उसे वहीं चिरनिद्रा में सुला दिया है। अब वह कभी नहीं थकेगा....मैंने अपने हाथों से राम का वध किया है। रावण बोला, उसके जटाजूट को पकड, अपने चंद्रहास खड्ग के एक वार से उसका सिर उसके शरीर से अलग कर दिया है। उसका सिर इस समय भी मेरे रथ में मेरे पैरों से ठुकराए जाने के लिए पायदान पर पडा है।"[46] विभीषण की पत्नी सरमा आकर रावण के कपट के बारे में बताती है, तो सीता राहत का अनुभव करती है।

कुम्भकर्ण का वध : इस प्रसंग को लेकर रामकथा और 'मानस' में कुछ अंतर है। 'मानस' का कुम्भकर्ण नींद के कारण हर समय पर सोता रहता है, तो रामकथा के कुम्भकर्ण को रावण मदिरा और भोजन देकर नशे में हर समय रखता है।[47] फिर कुम्भकर्ण के वध के बारे में 'मानस' और रामकथा में लगभग समान है। 'मानस' का कुम्भकर्ण राम को भगवान का अवतार समझता है, तो रामकथा का कुम्भकर्ण राम को योद्धा समझता है। दोनों में कुम्भकर्ण रावण को सीता को वापिस करने का उपदेश देता है। रावण के क्रोध पर युद्ध-भूमि में आकर दोनों में कुम्भकर्ण राम के हाथों में मारा जाता है।

रावण वध : इस प्रसंग को लेकर रामकथा और 'मानस' में अंतर है। 'मानस' के रावण के युद्ध में हाथ, सिर आदि कटने पर फिर उग आते हैं। तब राम विभीषण की ओर देखता है। विभीषण रावण की मृत्यु के रहस्य को स्पष्ट करता है कि

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

रावण अपनी नाभि में स्थित अमृत के कारण नहीं मरता है। यह जानकर राम रावण की नाभि के अमृत भांड को बाण से फोड देता है, तो रावण की मृत्यु हो जाती है। कोहली जी की रामकथा में रावण को लेकर ऐसा चित्रण नहीं है। राम-रावण युद्ध में राम के अचूक बाण से रावण की मृत्यु होती है। 'मानस' में रावण वध से दुखित विभीषण का वर्णन है, तो रामकथा में नहीं है। कोहली की रामकथा में राम लंका को विभीषण को सौंपकर निस्वार्थ से पालन करने के लिए कहकर अयोध्या लौट जाता है। 'मानस' में भी ऐसा ही है मगर उपदेश में अंतर है।

रावण वध और मंडोदरी का विलाप : रावण वध के बाद विलाप करने वाली मंडोदरी का विस्तृत चित्रण 'मानस' में है, तो कोहली जी की रामकथा में इसका उल्लेख नहीं है। अंत में विभीषण राम से मंडोदरी को पट्ट महिषि का सम्मान मिलने की बात कहता है, तो राम कहता है– "यही कहना चाहता हूँ कि यदि वे मार्ग की बाधा न बनें तो उन्हें अनावश्यक कष्ट न दिया जाए; किन्तु इतना संरक्षण भी न मिले कि एक नयी शूंपनखा का जन्म हो।"[48]

सीता की अग्नि-परीक्षा : इस प्रसंग को लेकर 'मानस' में और रामकथा में बहुत अंतर है। 'मानस' में अग्नि-परीक्षा का प्रसंग असली सीता को अग्नि से पुनर्ग्रहण करने के लिए है। खरदूषण वध के पूर्व राम लीला करने के लिए सीता को अग्नि प्रवेश कराकर माया सीता को पाता है। रावण वध के बाद राम सीता से अग्नि में जल कर आने के लिए कहता है। सीता ऐसे ही करती है। तब अग्नि दर्शन देकर सीता को राम को सौंपकर चला जाता है–

"धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य सृति जग बिदित जो।"[49]

कोहली जी की रामकथ में अग्नि परीक्षा ही नहीं है। रावण वध के बाद विभीषण और हनुमान मिलकर सीता को राम के पास लाते हैं, तो राम सीता को देखकर प्रसन्न होकर कहता है- "आओ सीते। राम ने अपने हाथ बढाए, अपने राम से अब और दूर नहीं रहो। एक वर्ष की दीर्घ अग्नि परीक्षा दी है तुमने।। अब तुम्हें कुछ सुख भी मिलना चाहिए।"[50]

इसके बाद राम और सीता के बीच जो संवाद होते हैं उनसे राम का आर्दश रूप स्पष्ट हो जाता है।

अयोध्या लौटना : 'मानस' की कथा में राम सभी प्रमुख साथियों के साथ आकाश मार्ग से अयोध्या लौटता है। अयोध्यावासियों के उल्लास तथा राम के राज्य ग्रहण के वर्णन के साथ राम-राज्य का वर्णन है। बाद में उत्तर काण्ड का वर्णन भी है।

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

कोहली जी की रामकथा में राम सीता को पाकर लंका को विभीषण को सौंपकर मंडोदरी को ईमान के साथ देखने के उपदेश के साथ कथा का अंत होता है। अयोध्या लौटने का वर्णन नहीं है।

निष्कर्ष : कोहली जी ने अपने वास्तविक एवं तर्कबद्ध दृष्टिकोण के कारण 'रामचरितमानस' में प्रस्तुत लीला, अलौकिकता आदि को नहीं माना है। उनकी रचनाओं में शुद्ध व्यावहारिक यथार्थ तथा मानवीय बोध है। उनकी रामकथा के राम जनस्थान का नायक है, जो जनस्थान के भील, ग्रामीण, वानर भालू आदि निम्न जाति के लोगों को इकट्टा कर शस्त्राभ्यास देकर रावण जैसे क्रूर राक्षस राजा को मार देता है।

स्पष्ट है कि कोहली जी ने अपनी धारणाओं के अनुसार मिथकीय प्रसंगों को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। तत्द्वारा उन मिथकीय प्रसंगों एवं पात्रों के प्रति जो आम धारणाएँ तथा विश्वास होते हैं, उनको लेकर पुनर्विचार व अन्वेषण करने की प्रेरणा जगाई है। रामायण की कथा को दोहराना उनका उद्देश्य कदापी नहीं रहा, बल्कि ऐसे स्थल व प्रसंगों को चुनकर जो बहुत काल्पनिक, अलौकिक तथा अवास्तविक लगते हैं, उनके व्यावहारिक धरातल पर सम्बन्ध सूत्र जोडने का अथक प्रयास किया है। रामायण हमारा राष्ट्रीय महाकाव्य है। राष्ट्रीय संस्कृति एवं परम्पराओं का धरोहर है। उसकी जो काल सम्बन्धी व काव्य-वेश सम्बन्धी अतिकल्पनाओं को हटाकर ऐतिहासिक, प्रामाणिक तथ्यों व तर्कों को जुटाने में कोहली जी ने जो अथक परिश्रम किया है, जिसके लिए उन्होंने पाठकों के मन में अप्रतिम तथा अमोघ स्थान बना लिया है। उनकी रामकथात्मक औपन्यासिक परियोजनाएँ हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक नई परम्परा का सूत्रपात हैं, जो सर्वथा नये भाव-बोध को जगाने में सक्षम हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

1. दीक्षा (भूमिका-1) - डॉ. नरेन्द्र कोहली

2. दीक्षा (भूमिका-3) - डॉ. नरेन्द्र कोहली

3. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.164

4. दीक्षा - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.36

5. दीक्षा - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.25&26

6. वही, पृ.25

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

7. वही, पृ.80

8. वही, पृ.192

9. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.182

10. दीक्षा - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.199

11. वही, पृ.228-231

12. वही, पृ.10

13. वही, पृ.11&12

14. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.26

15. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.70

16. वही, पृ.62&63

17. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.348

18. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.68&69

19. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.350

20. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.193

21. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.430

22. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.209

23. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.484

24. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.114

25. वही, पृ.233

26. अवसर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.234&235

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

27. संघर्ष की ओर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.346

28. वही, पृ.359

29. वही, पृ.394

30. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.584

31. संघर्ष की ओर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.35

32. वही, पृ.251

33. वही, पृ.451

34. युद्ध भाग-1 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.77&78

35. संघर्ष की ओर - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.422

36. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.596

37. युद्ध भाग-1 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.243

38. वही, पृ.244

39. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.625

40. युद्ध भाग-1 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.280

41. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.644

42. युद्ध भाग-1- डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.421&422

43. वही, पृ.435

44. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.649

45. वही, पृ.653

46. युद्ध भाग-2 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.240

ISSN 2454-2695
Vol 8 Issue 01
January 2022

47. युद्ध भाग-1 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.209

48. युद्ध भाग-2 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.366

49. रामचरितमानस - पं. पृथ्वीनाथ भार्गव, पृ.804

50. युद्ध भाग-2 - डॉ. नरेन्द्र कोहली, पृ.355&356

संपर्क : डॉ. एम. नारायण रेड्डी, जे.आर.पी.-हिन्दी, एन.टी.एस.-आई, भारतीय भाषा संस्थान, मानसगंगोत्री-पोस्ट, मैसूरु-570 006, कर्नाटक-राज्य, मोबाइल नं. 9480405650, modapumnreddy@gmail.com